

अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में लघु रोमंथी जानवरों के लिए उद्यान-चरागाह प्रणाली

एल.आर. गुर्जर, एस.सी. शर्मा एवं आर.सी.बलाई

भाकृअनुपकेन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर

भाकृअनुपकेन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर

अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में कम वर्षा के कारण काफी जमीन अनुपयोगी एवं बंजर रहती है। जबकि ऐसे क्षेत्रों में पशु संख्या अधिक होती है। जो कि चारे के कमी के कारण पूर्णतया उत्पादक नहीं होती है। खेती अयोग्य जमीन पर यदि चारे हेतु चरागाह एवं सनिश्चित आमदनी हेतु फलदार वृक्ष उद्यान-चरागाह प्रणाली के तहत लगाया जाये तो यह व्यवस्था भूमि का संरक्षण कर अच्छे चारे के उत्पादन दे सकती है। इसी के मध्यनजर दो उद्यान चरागाह प्रणालियों की जानकारी इस लेख के माध्यम से दी जा रही है।

बेर आधारित उद्यान चरागाह प्रणाली: बेर एक सूखे प्रदेशों का महत्वपूर्ण फल वृक्ष है जो कि न्यूनतम वर्षा या अकाल की स्थिति में भी अच्छी पैदावार देता है। बंजर परती भूमि पर 6-8 मीटर की कतारों में 6 मीटर की दूरी पर 2 X 2 X 2 घन फीट के गड्ढे खोदकर कम से कम दो फिट की ऊँचाई का बेर की पौध का रोपण किया जाता है। रोपण

से पूर्व गड्ढे में नीम की खली और सड़ी हुई गोबर की खाद को अच्छी तरह मिलाना चाहिए। कतारों के मध्यम में स्थान पर विकसित घासे जैसे अंजन धामण (अर्द्धशुष्क क्षेत्रों के लिए) लगानी चाहिए। इससे भूमि अच्छी तरह आच्छादित हो जाती है। फलस्वरूप भूमि कटाव में कमी होती है एवं जल का संरक्षण भी होता है।



चरागाह की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु इसमें बहुवर्षीय दलहनी चारे जैसे सेम, स्टाइलो, सिराट्रो एवं तितली मटर का फसल प्रदर्शन किया जाता है। इससे न केवल चारे की गुणवत्ता बढ़ती है अपितु चरागाह में लगाये

गये फल वृक्ष बेर की बढ़वार भी अच्छी होती है। बेर के पौधे की समय-समय पर छँगाई (पूनिंग) करनी चाहिए ताकि इसकी बढ़वार सही से हो तथा फल पैदावार हेतु बढ़ा होने पर ठीक आकार ले सके।



अरड़-आंवला आधारित कृषि प्रणाली

पशुओं (भेड़-बकरी) के लिए एक पोषक आहार का कार्य करती है। क्योंकि इनमें लगभग 16 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है। जिसकी पाचकता अच्छी होने से पशु इसे चाव से खाते हैं। शुरू के दिनों में फल वृक्ष की तीव्र बढ़वार हेतु 220 ग्राम युरिया एवं इतनी ही मात्रा में डी ए पी भी दिया जा सकता है।

वृक्षारोपण की जीवितता प्रतिशत सुनिश्चित करने के लिए संभव हो तो बुन्द-बुन्द सिंचाई की व्यवस्था करें अन्यथा वर्षा ऋतु के बाद सर्दी में 12-15 दिन के अन्तराल पर एवं गर्मी में 8-12 दिन के अन्तराल पर रोपित पौधों की सिंचाई करें। 4-5 वर्ष बाद ही बेर के वृक्ष लगातार आमदनी का साधन बन जाते हैं। इस प्रकार कम वर्षा वाले क्षेत्रों से पड़ती बंजर भूमि पर चारे की पैदावार के साथ फल से अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है।

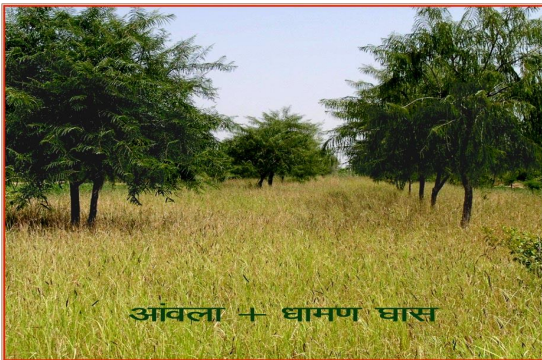
आँवला आधारित उद्यान-चरागाह प्रणाली:

आँवले का प्रयोग हमारे देश में अच्छे स्वास्थ्य हेतु बहुतायत में प्रचलन में है। इस कारण इसकी कीमत अच्छी प्राप्त हो जाती है। आँवला बंजर-पड़ती भूमि के अलावा उपजाऊ भूमि पर उगाये जाये तो अच्छी



किसान के खेत पर मूंगफली की फसल

पैदावार के साथ अधिक आमदनी दे सकता है। कम उपजाऊ भूमि पर ऊपर उल्लेखित घासों एवं दलहनी चारे के साथ एवं उपजाऊ भूमि पर चारा/अन्न फसलों के साथ चारा उद्यानिकी/कृषि उद्यानिकी के रूप में लगाया जा सकता है।



आँवला उद्यान स्थापित करने हेतु प्रक्रियाएँ बेर रोपण में बताया अनुसार ही की जा सकती है। संस्थान में किये गये अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि घास और दलहनी फसलों को 1 : 2 में आँवले के साथ लगाने पर उच्च गुणवत्ता वाला चारा प्राप्त हुआ एवं आँवले की पैदावार में भी वृद्धि हुई है। इस प्रकार आँवला आधारित उद्यान चरागाह प्रणाली शुष्क क्षेत्रों में आर्थिक रूप से लाभदायक है। साथ ही चारे की समस्या से भी निजात दिलाती है।